8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 08 -14 March 2026

सृजन शक्ति की अनंत धारा

पितांबरी® ॲग्रो टूरिझम

चलो घूमने दुनिया की सैर करने !

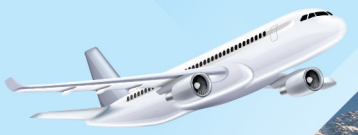

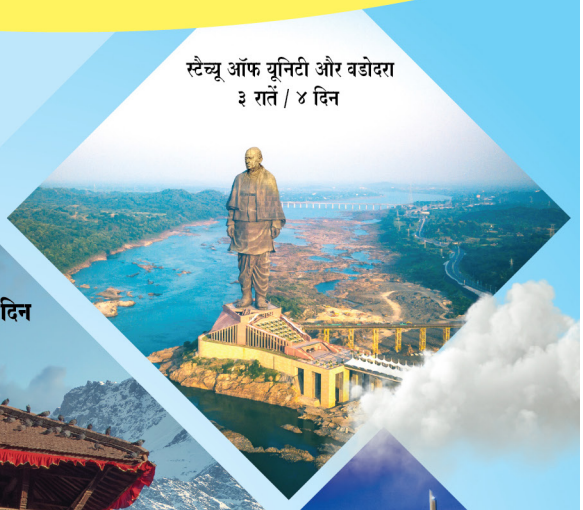

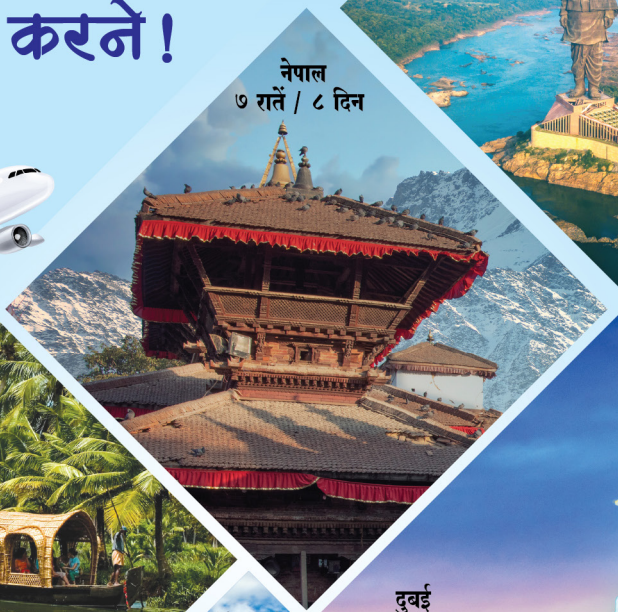

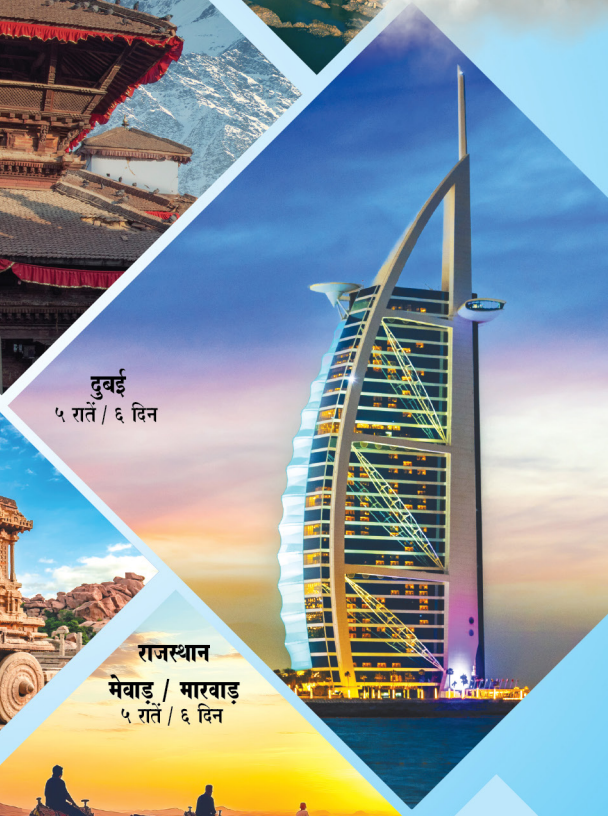

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी में सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क :
8828913131, 8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352

अनुक्रमणिका

बदली सोच, बदलती भूमिकाएं	रचना प्रियदर्शनी	04
नारी समाज की आधारशिला	डॉ. अन्नपूर्णा बाजपेयी 'आर्या'	06
चूल्हे से कारोबर तक की यात्रा	दीप्ति अंगरीश	07
सहअस्तित्व से ही समाज संतुलित	डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'	09
शौर्यचक्र विभूषित प्रथम महिला नौसैनानी	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	11
सेवा व समर्पण को मिला पद्मश्री	सोनम लववंशी	14
करुणा की प्रतिमूर्ति डॉ. अरमिडा फर्नांडीस	डॉ. मोनिका शर्मा	16
संघर्ष से निकली स्वर और साधना की शक्ति	निहारिका पोल-सर्वटे	18
नारी तुम अपराजिता	डॉ. नीतू गोस्वामी	21
खेल में स्त्री शक्ति का शंखनाद	अपर्णा झा	23
नारी ये तेरा कैसा रूप!	परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'	25
सुनते हो जी ..!	डॉ. साधना बलवटे	28
समाचार	-	29

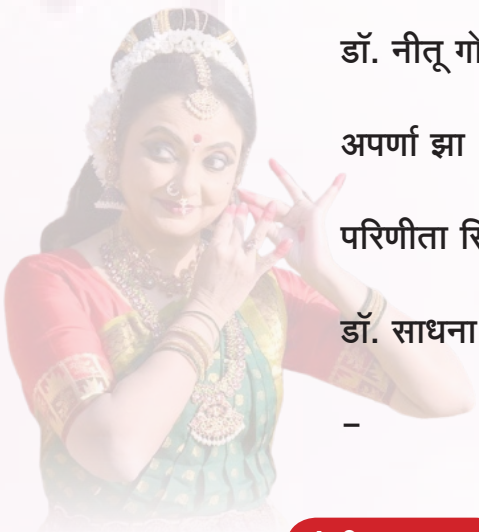

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

बदली सोच, बदलती भूमिकाएं

परिवर्तन

पहले आमतौर पर माना जाता था कि पुरुष घर के बाहर काम करेंगे और स्त्री घर सम्भालेंगी, लेकिन अब यह धारणा बदल रही है। पत्नी यदि ऑफिस जाती है तो पति घर सम्भालता है। यह बदलाव काम के बंटवारे का नहीं बल्कि सोच व समानता का भी है।

सुबह की धूप खिड़की से झांक रही थी। राधा जल्दी-जल्दी तैयार हो रही थी। आज ऑफिस की मीटिंग में उसे प्रेजेंटेशन देना था। वहीं, अमित रसोई में खड़ा नाश्ता बना रहा था।

राधा ने मुस्कुराते हुए कहा,

आज बच्चों के टिफिन में परांठे मत देना, उन्हें पास्ता चाहिए।

अमित ने हंसते हुए उत्तर दिया,

ठीक है, शेफ अमित तैयार है!

पड़ोस वाली शर्मा आंटी अपने बालकनी के मुंडेर पर खड़ी यह सब देख रही थीं। उन्होंने ताना मारते हुए कहा- अमित बेटा, ये काम तो औरतों का होता है। तुम क्यों कर रहे हो?

अमित ने मुस्कुराते हुए कहा: आंटी, काम का कोई जेंडर थोड़े न होता है। घर का काम भी उतना ही आवश्यक है, जितना ऑफिस। जब मुझे समय मिलता है तो मैं कर लेता हूं और जब राधा को मौका होता है, तो वह कर लेती है।

राधा ने यह सुनकर गर्व से कहा- बिल्कुल सही कहा अमित।

बच्चे यह सब देख रहे थे। उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि मां ऑफिस जा रही है और पापा घर सम्भाल रहे हैं। उनके लिए यह बस टीमवर्क था।

वर्ष 2016 में ऐसी ही एक मूवी आई थी, जिसका नाम था-'की एंड का' निर्देशक आर. बाल्की की इस मूवी के दोनों ही लीड किरदार सामान्य तौर से हमारे समाज में महिला एवं पुरुष के लिए निर्धारित भूमिकाओं से इतर विपरीत भूमिकाओं में दिखाए गए थे। यानी इस मूवी में पति अर्जुन कपूर घर सम्भालता है, जबकि पत्नी ऑफिस का कामकाज सम्भालती है। हालांकि मूवी फ्लॉप हो गई, पर इस मूवी ने समाज में जेंडर रोल से सम्बंधित नई चर्चा अवश्य शुरू कर दी, जिसका विषय था- पति सम्भाले घर और पत्नी जाए ऑफिस- इसमें बुरा क्या है? हमारे समाज में पारम्परिक रूप से यह माना जाता है कि पति को घर के बाहर काम करना चाहिए और पत्नी को घर के अंदर, लेकिन समय बदल रहा है और अब यह धारणा भी बदलनी चाहिए। यदि पति घर के काम करता है और पत्नी ऑफिस में काम करती है, तो इसमें कोई गलती नहीं है। हमें ऐसी व्यवस्थाओं को अपनाना चाहिए ताकि समाज में सम्मान और संतुलन की भावना और गहरी हो सके।

रचना प्रियदर्शनी

समानता का असली अर्थ

घर और ऑफिस दोनों में ही काम हैं- दोनों में मेहनत, जिम्मेदारी और कौशल चाहिए।

जब पति घर सम्भालता है और पत्नी ऑफिस जाती है तो यह असमानता नहीं बल्कि संतुलन है। यह व्यवस्था दिखाती है कि काम का बंटवारा लिंग पर नहीं बल्कि क्षमता और पसंद पर होना चाहिए। जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता-पिता बराबरी और सहयोग से काम कर रहे हैं तो वे भी यही सीखते हैं। यह उन्हें सिखाता है कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता- घर का हो या बाहर का।

व्यक्तिगत पसंद और क्षमता

पति-पत्नी का रिश्ता साझेदारी है। जब एक बाहर काम करता है और दूसरा घर सम्भालता है तो यह सहयोग का सुंदर उदाहरण बनता है। दोनों मिलकर परिवार की आवश्यकताएं पूरी करते हैं और एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। कुछ पुरुष खाना बनाने, बच्चों की देखभाल या घर की व्यवस्था में निपुण होते हैं। वहीं कई महिलाएं ऑफिस की चुनौतियों को बेहतर तरीके से सम्भालती हैं। यदि दोनों अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार जिम्मेदारी बांटें तो संतोष और सफलता दोनों मिलते हैं।

लिंग के आधार पर न हो काम का बंटवारा

जीवन परिस्थितियों पर निर्भर करता है। कभी पत्नी को ऑफिस जाना पड़ सकता है और पति को घर सम्भालना। यह लचीलापन परिवार को आधुनिक समय के साथ चलने और सफल होने में सहायता करता है। यह व्यवस्था समाज को बताती है कि काम का बंटवारा लिंग पर आधारित नहीं होना चाहिए। इससे रूढ़िवादी सोच को चुनौती मिलती है और समानता का रास्ता खुलता है। वैसे भी हर व्यक्ति की पसंद और क्षमता अलग-अलग होती है। कुछ पुरुषों को घर के काम करना पसंद हो सकता है और वे इसमें निपुण हो सकते हैं। इसी प्रकार कुछ महिलाएं ऑफिस के काम में अधिक रुचि और निपुणता रखती हैं। उन्हें घर के काम 'बस काम भर' ही आते हैं। ऐसे में यदि वे दोनों एक-दूसरे के वर्क रोल को चेंज करने का निर्णय लेते भी हैं, इसमें समस्या क्या है? समाज के तथाकथित ठेकेदार होते कौन हैं, यह तय करनेवाले कि किसी घर के 'पुरुष को क्या करना चाहिए' या फिर 'किसी महिला को क्या करना चाहिए।' उल्टे, इस प्रकार की व्यवस्था व्यक्तिगत पसंद और क्षमता के अनुसार काम करने की स्वतंत्रता देती है, जिससे काम में संतोष और सफलता मिलती है। वो कहते हैं न कि 'जिसका काम उसी को साजे और करे तो डंका बाजे' तो जो जिसमें परफेक्ट है, उसे ही करने दीजिए वह काम। आप तो बस अपने काम से काम रखिए।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

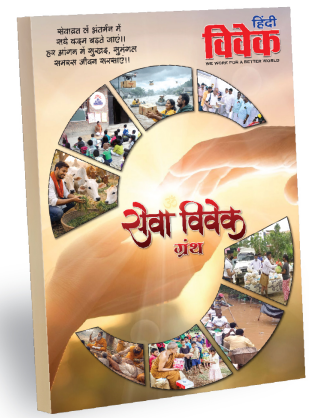

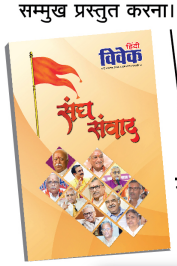

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता मूल्य ₹ 500 + सेवा विवेक ग्रंथ मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

UPI पेमेंट लेने के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

नारी समाज की आधारशिला

जो महिलाएं बाहर जाकर कामकाज नहीं करती हैं, उनका समाज में योगदान कम है, ऐसा नहीं है। वास्तव में वे समाज की आधारशिला हैं। उनका श्रम भले ही मौन हो, पर उसका प्रभाव अत्यंत व्यापक और दीर्घकालिक होता है।

संचालिका

समाज में अधिकतर कामकाजी महिला शब्द का अर्थ उस स्त्री से जोड़ा जाता है जो घर से बाहर किसी कार्यालय, संस्थान या उद्योग में कार्य कर आर्थिक आय अर्जित करती है। निःसंदेह ऐसी महिलाएं अपनी परिश्रम और प्रतिभा से समाज को नई दिशा दे रही हैं, परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि जो महिलाएं घर और परिवार की जिम्मेदारियां निभाती हैं, वे भी समाज की संरचना में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका योगदान भले ही वेतन-पर्ची में दर्ज न हो, परंतु वह समाज की जड़ों को सींचती हैं और पीढ़ियों को आकार देती हैं। समाज की वास्तविक शक्ति केवल आर्थिक विकास में नहीं बल्कि उन मूल्यों में निहित है जिन्हें घर की चारदीवारी में एक नारी अपने प्रेम और त्याग से सींचती है। आज जब ज्यादातर स्त्रियां कामकाजी हैं, पैसे कमा रही हैं और शान से रहती हैं, किंतु इसके पीछे का द्वंद्व केवल वही समझ सकती हैं जो कामकाजी हैं। इसलिए जो घर से बाहर जाकर कोई काम नहीं कर रही हैं तो वे परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, अब्दुल कलाम, लक्ष्मी बाई, झलकारी बाई, अहिल्या बाई के जैसी संतान जो राष्ट्र रक्षक, शिक्षक, चिकित्सक, इंजीनियर, वैज्ञानिक बन देश की सेवा को तत्पर होगी, को गढ़ रही होती हैं। परिवार समाज की सबसे छोटी और सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। यदि परिवार सुदृढ़ है तो समाज भी सुदृढ़ होगा। एक गृहिणी परिवार के प्रत्येक सदस्य को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती है। वह घर के वातावरण को प्रेम, अनुशासन और स्नेह से संतुलित करती है। घर की व्यवस्था, समय का प्रबंधन, संसाधनों का सदुपयोग ये सभी कार्य किसी कुशल प्रबंधन से कम नहीं हैं। अंतर केवल इतना है कि उसके कार्य का कोई औपचारिक पदनाम नहीं होता। वे परिवार की अदृश्य संचालिका होती हैं। इस सम्बंध में सुप्रीम कोर्ट ने गृहिणियों के अधिकारों को मजबूत करते हुए कहा है कि घरेलू हिंसा की शिकार बहू को अपने पति के रिश्तेदारों (सास-ससुर) के घर में भी रहने का कानूनी अधिकार है, भले ही वह सम्पत्ति पति की न हो। न्यायालय ने साझा घर की परिभाषा को व्यापक बनाया है, जिसमें महिला का अपने वैवाहिक घर में रहने का अधिकार सुरक्षित किया गया है। न्यायालय ने माना है कि समाज की प्रगति महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने पर निर्भर करती है और उन्हें घरेलू हिंसा से बचाना अनिवार्य है। एक गृहिणी का श्रम समाज की अर्थव्यवस्था में अप्रत्यक्ष योगदान देता है तो उसको एक निश्चित रकम सैलरी के रूप में मिलनी चाहिए। न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि महिला शिक्षित है तो भी वह पति से गुजारा भत्ता मांग सकती है क्योंकि बेरोजगार महिला आलसी नहीं होती। वह पूरा दिन घर पर काम करती है, पति को काम करने योग्य बनाती है। पति की मृत्यु हो जाने पर विधवा महिला को ससुराल की सम्पत्ति से हिस्सा पाने का अधिकार है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं- आर्थिक कठिनाइयां, स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं, पारिवारिक तनाव झेलती हुई महिलाओं का धैर्य और संयम परिवार के लिए सम्बल बनता है। वह स्वयं की पीड़ा को पीछे रखकर दूसरों का उत्साह बढ़ाती हैं।

अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां विपरीत परिस्थितियों में महिलाओं ने घर की जिम्मेदारियां सम्भालीं और परिवार को टूटने से बचाया। ●●●

डॉ. अन्नपूर्णा बाजपेयी 'आर्या'

चूल्हे से कारोबर तक की यात्रा

अर्थव्यवस्था

आज महिलाएं घर तक सीमित नहीं हैं। वे देश की अर्थव्यवस्था से लेकर विदेशों में बड़े पदों पर विराजमान हैं। घर हो या बाहर आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

दीप्ति अंगरीश

कुछ समय पहले तक महिलाओं के प्रति सोच बहुत नकरात्मक थी। जैसे समय बदला, वैसे-वैसे उनके प्रति सोच बदलती गई। कुछ समय पहले तक माना जाता था कि महिलाएं केवल घर का काम करती हैं, लेकिन अब समय बदल गया है। समय के साथ-साथ यह सोच भी बदली है। आज महिलाएं घर के साथ-साथ बाहर भी काम कर रही हैं और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रही हैं। वे छोटे काम से लेकर बड़े पदों तक हर जगह अपनी पहचान बना चुकी हैं।

ऐसा नहीं है कि भारतीय महिलाएं केवल भारत में ही अपनी योग्यता का परचम लहरा रही हैं। हमारी देश की आधी दुनिया विदेशों में भी अपनी धाक जमा रही हैं। इसका बेहतरीन उदाहरण है गीता गोपीनाथ। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में गीता गोपीनाथ उच्च पद पर काम किया है। उनका काम दुनिया की अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। आधी दुनिया और आर्थिक जगत की बात करें, तो ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं का योगदान बहुत बड़ा है। गांवों में महिलाएं खेती करती हैं, बीज बोती हैं, फसल काटती हैं और पशुपालन करती हैं। वे दुग्ध उत्पादन में भी आगे हैं। अमूल जैसी संस्था से लाखों महिलाएं जुड़ी हुई हैं। वे दूध बेचकर अपनी आय बढ़ाती हैं। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरती है और देश की अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है। आज कई महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हुई हैं। ये समूह महिलाओं को छोटे ऋण देते हैं ताकि वे अपना छोटा व्यवसाय शुरू कर सकें। महिलाएं अचार, पापड़, मसाले, कपड़े, हस्तशिल्प और सिलाई का काम करती हैं। इससे वे आत्मनिर्भर बनती हैं। छोटे-छोटे काम मिलकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।

शहरों में महिलाएं बड़ी कम्पनियों में काम कर रही हैं। वे इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक, बैंक अधिकारी और प्रबंधक के रूप में काम करती हैं। कई महिलाएं अपनी खुद की कम्पनी भी शुरू कर रही हैं। वे नई सोच और नए विचारों के साथ व्यापार कर रही हैं। इससे देश में नए रोजगार

पैदा हो रहे हैं। सरकार भी महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चला रही है। लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जब लड़कियां पढ़ेंगी और अच्छी शिक्षा पाएंगी, तभी वे अच्छे पदों पर काम कर सकेंगी। शिक्षा महिलाओं को आत्मविश्वास देती है। आत्मविश्वास से वे बड़े निर्णय ले सकती हैं।

भारत के सबसे बड़े आर्थिक पद की बात करें तो इसका बेहतरीन उदाहरण है निर्मला सीतारमण। भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक महिला हैं। वे प्रत्येक साल देश का बजट प्रस्तुत करती हैं। बजट में सरकार की आय और खर्च का पूरा हिसाब होता है। यह तय किया जाता है कि पैसा शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, खेती और अन्य कामों में कैसे लगाया जाएगा। यह बहुत जिम्मेदारी का काम है। एक महिला का इस पद पर होना यह दिखाता है कि महिलाएं बड़े आर्थिक निर्णय ले सकती हैं।

आर्थिक जगत की बात को आगे बढ़ाएं, तो बैंकिंग क्षेत्र में भी महिलाएं आगे हैं। भारतीय स्टेट बैंक की पहली महिला अध्यक्ष बनीं अरुणधति भट्टाचार्य। बता दें कि भारतीय स्टेट बैंक देश का सबसे बड़ा सरकारी बैंक है। उनके नेतृत्व में बैंक ने अच्छा काम किया। इससे यह साबित हुआ कि महिलाएं वित्त और प्रबंधन में भी सक्षम हैं।

आर्थिक पक्ष में उद्योग और व्यापार के क्षेत्र की बात करें तो यहां भी महिलाओं ने अपना परचम लहराया है। इसका बेहतरीन उदाहरण है किरण मजूमदार शाह। उन्होंने बायोटेक क्षेत्र में अपनी कम्पनी शुरू की। उन्होंने कड़ी मेहनत से उसे सफल बनाया। आज उनकी कम्पनी देश और विदेश में जानी जाती है। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। यह उदाहरण दिखाता है कि महिलाएं बड़े उद्योग चला सकती हैं।

महिलाएं घर की आर्थिक व्यवस्था भी अच्छे से सम्भालती हैं। वे घर का बजट बनाती हैं, खर्च को नियंत्रित करती हैं और बचत करती हैं। वे कम पैसे में भी घर को अच्छे से चलाना जानती हैं। यह भी एक तरह का आर्थिक योगदान है। यदि हर घर की आर्थिक स्थिति अच्छी होगी, तो देश की स्थिति भी अच्छी होगी।

आज महिलाएं राजनीति में भी सक्रिय हैं। वे मंत्री, सांसद और अधिकारी बन रही हैं। वे विकास की योजनाएं बनाती हैं और उन्हें लागू करती हैं। इससे समाज के सभी वर्गों को लाभ मिलता है। महिलाओं की सोच में संवेदनशीलता होती है, इसलिए वे समाज के कमजोर वर्गों के लिए भी काम करती हैं।

महिलाएं अब केवल सहायक नहीं हैं, बल्कि नेतृत्व कर रही हैं। वे देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे रही हैं।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

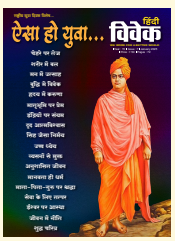

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

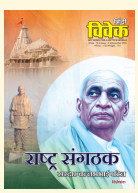

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

8मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

सहअस्तित्व से ही समाज संतुलित

समाज में स्त्री और पुरुष दोनों की सक्रिय भागीदारी और दोनों का समान अस्तित्व ही किसी भी समाज के विकास का आधार होता है। घर से लेकर कार्यस्थल तक कर्तव्य, अधिकार तथा निर्णय लेने में स्त्री और पुरुष की समान भागीदारी होनी चाहिए।

समानता

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

भारतीय समाज की बात करे तो यहां भी शील और चरित्र की पवित्रता और शुचिता के मानदंड स्त्री और पुरुष के लिए भिन्न- भिन्न रहे हैं, जो कि निश्चित ही पक्षपात पूर्ण था। अब समय आ गया है जब शील और चरित्र की व्याख्या केवल पुरुषवादी दृष्टि से नहीं बल्कि एक तटस्थ भाव से विकसित हो। हम कह सकते हैं कि स्त्री के लिए आवश्यक है कि वह अपने आत्मविश्वास को सुदृढ़ बनाएं, कारण स्त्री का स्वयं के प्रति स्वाभाविक संकोच का भाव उसे कमजोर बना देता है। वहीं भारतीय स्त्रियों के प्रति समाज व पुरुषों की मानसिकता में भी आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। समाज जो समर्पण, त्याग और सेवा का भाव स्त्रियों से चाहता है तथा पुरुष के प्रति श्रेष्ठतावादी सिद्धांत को अपनाता है, वहां उसे स्त्रियों के प्रति भी उदारवादी दृष्टिकोण अपनाना होगा। उनके विकास के मार्ग में अवरोध पैदा न करते हुए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करें। यदि पुरुष समाज नि:स्वार्थ भाव से स्त्रियों को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान कर उनके सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त करते हैं तो निश्चित रूप से भारतीय समाज में स्त्रियों का जीवन अधिक संतोषप्रद और खुशहाल होगा। वे स्वतंत्र होकर उन्मुक्त वातावरण में अपनी अस्मिता स्वयं स्थापित करेंगी। जिससे वे कंधे से कंधा मिलाकर घर, परिवार और देश का निर्माण करने में समर्थ होंगी। हर्ष का विषय यह है कि भारत बदल रहा है।

पूरक है, प्रतिस्पर्धी नहीं

हमें अपने ऐतिहासिक कागजातों का पुन: गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता है, कारण वेदों में स्त्री को शक्ति और पुरुष को शिव का रूप कहा गया है। शक्ति के साथ होने पर ही शिव पूर्ण कहे जाते हैं। आज समाज में ऐसे कई उदाहरण हैं जहां स्त्रियों ने समाज के विकास की नींव में प्राथमिकता से पहल की और समाज को एक नया आयाम दिया। शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले का जीवन सहअस्तित्व का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जीवनसाथी के साथ कंधे से कंधा

मिलाकर समाज में एक नई सकारात्मक पहल की जा सकती है। यदि समाज में स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के सपनों को अपना लें तो समाज के विकास की गति निश्चित प्रभावी होगी। चिकित्सा, विज्ञान, भौतिकी के साथ अंतरिक्ष में भी महिलाओं ने चांद से साक्षात्कार किया है। जब कोई समाज प्रगति करता है तो राष्ट्र भी नया लक्ष्य पाता है। यह तभी सम्भव है जब स्त्री और पुरुष दोनों को समाज में समान अवसर दिए जाएं।

सामाजिक चेतना में जाग्रति

नि:संदेह! अब वह समय नहीं रहा जहां यदि कोई बालिका फुटबॉल खेलना या आर्मी में भर्ती होना चाहती हो और उसे विवश होकर कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाकर तसल्ली करनी पड़ती हो या कि कोई बालक जिसे पाक कला में रूचि हो और उसे अपनी इस रूचि को केवल इसलिए मारना पड़े कि यह क्षेत्र तो बालिकाओं का है। कहने का आशय अब केवल गुणों के आधार पर और आपकी सफलता के आधार पर आपका मूल्यांकन होगा आप चाहे जिस भी जेंडर के हों। कभी भारत में स्त्री और पुरुष के अनुरूप कार्य भी दो खेमें में बंटे थे, परंतु आनंदी बाई गोपालराव जोशी ने चिकित्सा के क्षेत्र तथा कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में जाकर यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी कार्य पर किसी एक जेंडर का अधिकार नहीं है। वहीं संजीव कपूर, विकास खन्ना, कुनाल कपूर आदि ने पाक कला में अपनी निपुणता से इस बात को सिरे से नकार दिया है कि रसोई केवल महिलाओं के ही अधिकार क्षेत्र का स्थान नहीं है।

स्त्री की सहयोगी है तकनीकी

हम कहते हैं विदेशों में स्त्री को अधिक स्वतंत्रता है, लेकिन क्या हमने समझा है कि वहां यह स्वतंत्रता क्यों है? तकनीक के कारण से ही। उस दौर के भारतीय समाज को देखेंगे तो पाएंगे, स्त्रियों को घर से बाहर जाना है तो कैसे जाएं? वाहन सबके पास उपलब्ध नहीं, दूसरे किसी कार्यालय में या किसी भी भारी कार्य हेतु यही कहा जाता था, यह काम लड़कियों के बस का नहीं है...इसमें ज्यादा ताकत की आवश्यकता है, लेकिन आज तकनीकी ने संसाधन उपलब्ध कराकर न केवल स्त्री की इस यात्रा को आसान किया है अपितु मशीनों ने शारीरिक बल की समस्या को भी नकार दिया है। यही कारण है अधिकांश कार्यालयों में प्रमुख पदों पर महिलाएं पदस्थ हैं। आज महिलाओं ने समाज में अपनी भूमिका को सिद्ध किया है। कहते हैं, 'सोच को बदलो सितारे बदल जाएंगे।' कोई भी समाज महज परम्पराओं से नहीं विचारों की शक्ति से बदलता है। शिक्षा के अधिकार ने क्या स्त्री, क्या पुरुष दोनों को ज्ञान के कौशल से समृद्ध किया है। यह बात आज भारत के शीर्षस्थ बैठे लोगों को समझ आ रही है।

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

शौर्यचक्र विभूषित प्रथम महिला नौसैनानी

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

उपलब्धि

दिलरू के नाम से प्रसिद्ध जोड़ी ने अपनी समुद्री नौकायन उपलब्धि और प्रथम महिला शौर्यचक्र सम्मान के कारण भारतीय समाज में महिलाओं के लिए नए द्वार खोले हैं। आज अनेक युवा महिलाएं नौसेना और अन्य सशस्त्र सेनाओं में करियर बनाने के लिए प्रेरित हो रही हैं।

भारतीय नौसेना समुद्री साहस और पराक्रम की ध्वजवाहक है। इस वर्ष 2026 में 77वें गणतंत्र दिवस पर पहली बार भारतीय नौसेना की 2 महिला अधिकारियों लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. को 'शौर्य चक्र' से सम्मानित किया गया है। यह उन दोनों की मात्र व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, वरन् उस ऐतिहासिक क्षण का उद्घोष है जब महिलाओं ने नौसेना में अपनी दावेदारी को न केवल स्थापित किया है बल्कि उसे शौर्य और पराक्रम की ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

शौर्य चक्र भारत का तीसरा सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार है, जो अदम्य साहस, वीरता और असाधारण धैर्य के लिए दिया जाता है। इन दोनों महिला अधिकारियों को शौर्य चक्र भारत की वैश्विक समुद्री ताकत और लैंगिक समानता के प्रति प्रतिबद्धता के प्रतीक 'नाविका सागर परिक्रमा-खख' अभियान में उनके अद्वितीय पराक्रम के लिए प्रदान किया गया है। इस अभियान के अंतर्गत मेसर्स एक्रेरियस शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा स्वदेश निर्मित भारतीय नौसेना की 56 फुट की नौकायन पोत आईएनएसवी तरिणी पर सवार होकर दोनों ने 25,000 से अधिक नॉटिकल मील अर्थात् लगभग 50,000 किमी की ऐतिहासिक बिना इंजन के सिर्फ विंड-पावर्ड सोलो समुद्री यात्रा पूरी की।

लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा की यह यात्रा केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं थी बल्कि साहस, धैर्य और मानसिक दृढ़ता की चरम परीक्षा भी थी। पहली बार भारतीय महिलाओं ने डबल-हैंडेड मोड में नौकायन पोत पर पृथ्वी की सफल परिक्रमा की। महीनों तक खुले समुद्र की ऊंची लहरें, प्रतिपल परिवर्तित होता अप्रत्याशित तथा अत्यधिक रुक्ष मौसम, निर्जलीकृत भोजन जैसे सीमित संसाधनों के साथ निर्वहन और अकेलेपन की चुनौती, लेकिन न हौसला टूटा और न दिशा बदली। आज भारतीय नौसेना की ये दोनों महिलाएं वीरता के साथ-साथ उस संघर्ष की भी जीवंत उदाहरण बन गई हैं, जिसमें उन्होंने समाज की परम्परागत सोच, संस्थागत चुनौतियों और व्यक्तिगत कठिनाइयों को पार किया है। सच तो यह है कि उनका यही साहस उन्हें शौर्य चक्र तक ले गया।

भारतीय नौसेना में महिलाओं का प्रवेश जुलाई 1992 से शुरू हुआ। उससे पहले महिलाएं केवल मेडिकल सर्विसेज के माध्यम से ही सशस्त्र बलों में शामिल हो सकती थीं। 1992 में पहली बार नौसेना ने उन्हें शॉर्ट सर्विस कमीशन के अंतर्गत चुनिंदा गैर-चिकित्सीय शाखाओं में नियुक्त करना शुरू किया। यह कदम भारतीय नौसेना के इतिहास में लैंगिक समानता की दिशा में एक बड़ा बदलाव था। समाज की परम्परागत सोच यह मानती थी कि समुद्र की कठिनाइयां, युद्ध की परिस्थितियां और अनुशासन की कठोरता केवल पुरुषों के लिए उपयुक्त हैं। ऐसे पुरुष प्रधान नौसेना क्षेत्र में महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती स्वीकार्यता की थी। धीरे-धीरे नौसेना में प्रवेश करने वाली महिलाओं ने इस धारणा को तोड़ा और उन्हें बार-बार यह सिद्ध करना पड़ा कि वे शारीरिक और मानसिक रूप से दृढ़ हैं। लम्बी दौड़, तैराकी, हथियार संचालन, समुद्री अभियानों की तैयारी जैसे चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षणों में महिलाओं ने सफल होकर यह सिद्ध किया कि वे नौसेना में भी नेतृत्व करने, दल को प्रेरित करने और संकट की घड़ी में सही निर्णय लेने में सक्षम हैं। भारतीय नौसेना में आज 580 महिला अधिकारी और 725 महिला नाविक कार्यरत हैं। इनमें लॉजिस्टिक्स, आर्मामेंट इंस्पेक्शन, शिक्षा, नौकायन और अन्य तकनीकी शाखाएं शामिल हैं। यह संख्या लगातार बढ़ रही है और नौसेना ने हाल के वर्षों में महिलाओं को स्थायी कमीशन देने के साथ-साथ युद्धपोतों पर भी नियुक्त करना शुरू किया है। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा नौसेना की लॉजिस्टिक्स और आर्मामेंट इंस्पेक्शन से आती हैं।

केरल के कोझिकोड में भारतीय सेना में जवान पिता के घर जन्मीं दिलना को भारतीय नौसेना में जाने की प्रेरणा बचपन से ही घर कर गई थी। उन्होंने सन् 2014 में नौसेना की लॉजिस्टिक्स शाखा से इसमें प्रवेश प्राप्त किया। वहीं एनसीसी में सीखी राइफल शूटिंग और राष्ट्रीय स्तर पर खेले क्रिकेट ने उनके साहसी स्वभाव को और भी सशक्त बना दिया। दिलना के पति भी नौसेना में अधिकारी हैं। ठीक ऐसी ही कुछ पृष्ठभूमि लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा को भी विरासत में मिली। मूलतः तमिलनाडू निवासी रूपा के पिता वायुसेना में थे, जिससे उन्हें प्रारम्भ से ही रक्षा सेवाओं में जाने की ललक बनी हुई थी। अतः वर्ष 2017 में वे नौसेना के आयुध निरीक्षण कैडर में शामिल हुईं। इस तरह नौसेना से जुड़ीं इन दोनों महिला अधिकारियों के पास इस अभियान में जाने से पहले 38,000 समुद्री मील यानी 70,376 कि.मी. का नौकायन अनुभव था। 7 वर्षों से साथ-साथ नौकायन कर रहीं दिलना और रूपा ने इस महासमुद्री यात्रा के लिए 3 वर्ष से अधिक समय तक कठोर प्रशिक्षण लिया। इसमें समुद्र विज्ञान, मौसम विज्ञान, नेविगेशन, जीवित रहने की तकनीक और समुद्र में चिकित्सा देखभाल पर महासागरीय नौकायन के पहलुओं पर व्यापक प्रशिक्षण शामिल थे। इन्हीं साझा अनुभवों से वे एक-दूसरे की ताकत और कमजोरी को जानती थीं। अतः दोनों की शौर्य चक्र तक की यात्रा में यही पारस्परिक समझ उनकी शक्ति बनी।

लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा को लेकर 'नाविका सागर परिक्रमा-खख' अभियान 2 अक्टूबर 2024 को गोवा से शुरू हुआ और 8 महीने से अधिक समय तक की समुद्री यात्रा को पूर्ण करके मई 2025 में वापस लौटा। इन दोनों से पहले एशिया से किसी ने भी यह यात्रा पूरी नहीं की थी। इस अभियान में दिलना और रूपा ने ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फॉकलैंड्स होते हुए तीन महासागर, चार महाद्वीप और अनुभवी नाविकों के लिए भी कठिन तीन ग्रेट कैप (दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन के पास अटलांटिक तट पर स्थित प्रसिद्ध पथरीला प्रायद्वीप केप ऑफ गुड होप, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का सबसे दक्षिण-पश्चिमी मुख्य भूमि बिंदु केप लीउविन और दक्षिण अमेरिका का दक्षिणतम बिंदु केप हॉर्न) पार किए। इसके लिए दिलना और रूपा को 'केप हॉर्नर' की उपाधि से सम्मानित किया गया है। अभियान के दौरान कितनी ही बार ऐसे पल भी आए जब जीवन और मृत्यु के बीच केवल एक क्षण का अंतर था, लेकिन उन्होंने भय को परे कर कर्तव्य को सर्वोच्च रखा। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और रूपा की यह सफलता दर्शाती है कि साहस और संकल्प किसी लिंग की सीमा में बंधे नहीं होते। महिलाएं भी समुद्र की लहरों पर उतनी ही दृढ़ता से खड़ी हो सकती हैं जितना कोई पुरुष।

●●●

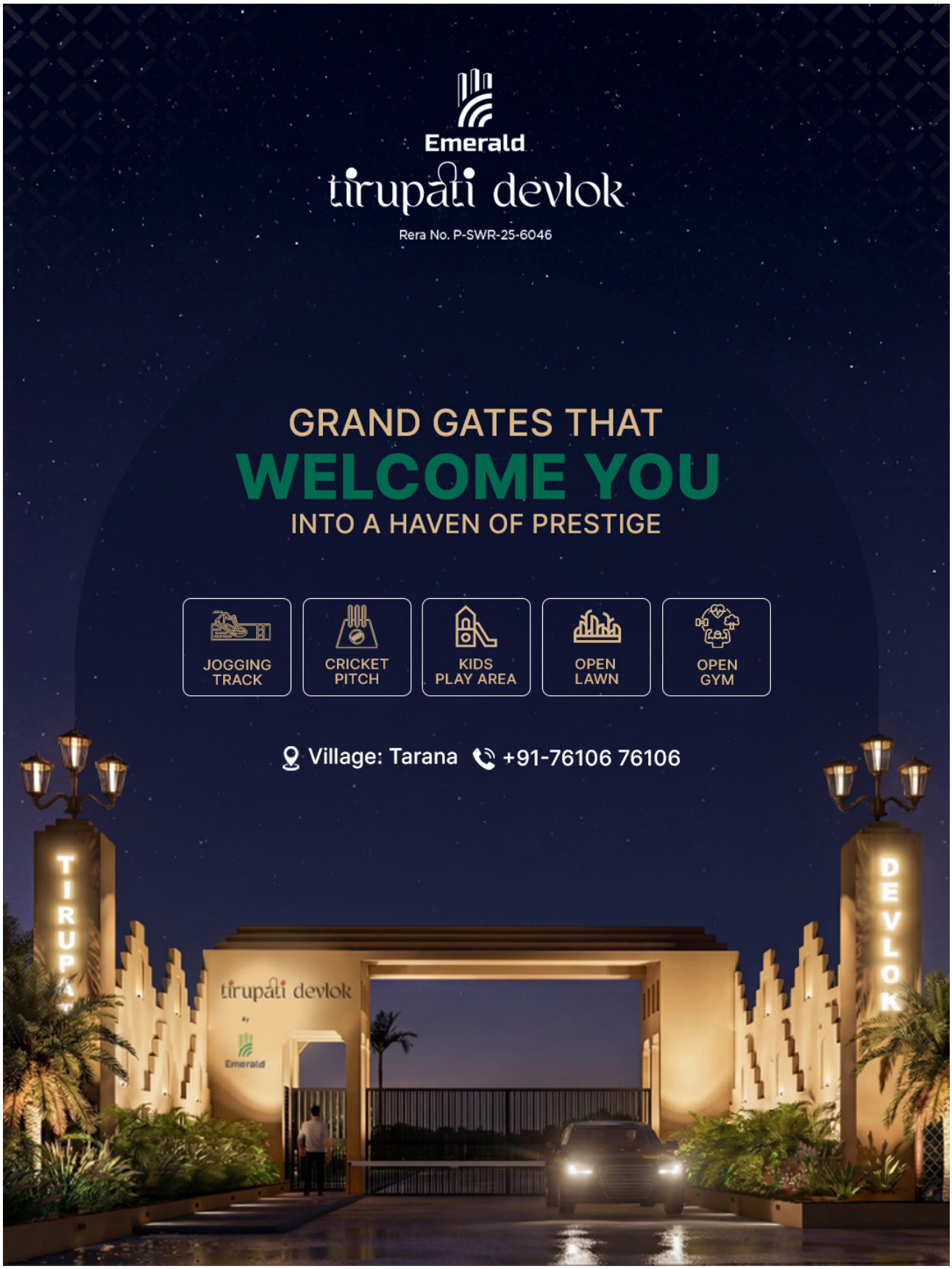
Emerald
tirupati devlok
Rera No. P-SWR-25-6046
GRAND GATES THAT
WELCOME YOU
INTO A HAVEN OF PRESTIGE
JOGGING TRACK
CRICKET PITCH
KIDS PLAY AREA
OPEN LAWN
OPEN GYM
Village: Tarana
+91-76106 76106
TIRUPATI
DEVLOK
tirupati devlok
Emerald

बुधरी ताती

कोल्लाकल देवकी अम्मा

एस.जी. सुशीलम्मा

वर्ष 2026 के पद्म सम्मानों में तीन ऐसे नाम सामने आएं, जिन्होंने सिद्ध किया कि परिवर्तन किसी कैमरे की फ्लैश से नहीं बल्कि धैर्य, जोखिम और निरंतरता से जन्म लेता है। बुधरी ताती, कोल्लाकल देवकी अम्मा और एस.जी. सुशीलाम्मा इन्हें वर्ष 2026 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

सेवा व समर्पण को मिला पद्मश्री

भारत के सामाजिक और पर्यावरणीय परिदृश्य में ये वे नाम हैं, जो दशकों तक काम करते रहे। वे सुर्खियों में भले कम दिखें, लेकिन जमीनी बदलाव की असली शक्ति रखते हैं। पद्मश्री से सम्मानित इन तीन महिलाओं की कहानियां यह याद दिलाती हैं कि सच्ची सेवा वही है, जो बिना किसी अपेक्षा के, निरंतर और निष्ठा से की जाए। समाज को बेहतर बनाने का सपना देखने वाले हर व्यक्ति के लिए ये नाम प्रेरणा के दीपक की तरह हैं, जो अंधेरे में भी रास्ता दिखाते हैं।

बुधरी ताती- छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में काम करना केवल सामाजिक सेवा नहीं, साहस का जोखिम भरा निर्णय भी है। पिछले 40 से अधिक वर्षों से बुधरी ताती ने जिन क्षेत्रों में काम किया, वहां विकास योजनाओं से पहले डर पहुंचता था। स्कूलों से पहले सन्नाटा बसता था। उन्होंने महिलाओं और आदिवासी समुदायों के बीच शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलम्बन की मशाल जलाई। यह काम किसी एनजीओ की मीटिंग से नहीं हुआ, यह मिट्टी के आंगन, कच्ची पगडंडियों और बंदूक की गूंज के बीच हुआ। नक्सल क्षेत्र में सामाजिक कार्य का अर्थ है दोनों ओर से संदेह झेलना। सत्ता भी पूछती है, आप वहां क्यों? और बंदूकधारी भी पूछते हैं, आप यहां क्यों? ऐसे में तटस्थ रहकर समाज का हाथ थामे रखना ही असली परीक्षा है। बुधरी ताती ने यह परीक्षा चार दशक तक दी है। उनका पद्मश्री केवल एक व्यक्ति का सम्मान नहीं, उन गुमनाम कार्यकर्ताओं का भी है जो सुर्खियों से दूर रहकर समाज की नींव मजबूत करते हैं।

सोनम लववंशी

कोल्लाकल देवकी अम्मा- जब 92 वर्ष की आयु में किसी का नाम राष्ट्रीय सम्मान के लिए घोषित होता है तो वह आयु नहीं, विचार की लम्बी यात्रा का सम्मान होता है। केरल की पर्यावरण कार्यकर्ता कोल्लाकल देवकी अम्मा ने 45 वर्षों से अधिक समय वनीकरण और पर्यावरण संरक्षण को समर्पित किया। आज जब

जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चर्चा होती है, कार्बन क्रेडिट की गणनाएं की जाती हैं और ग्रीन शब्द बाजार की रणनीति बन चुका है, तब देवकी अम्मा की साधना हमें याद दिलाती है कि पर्यावरण संरक्षण किसी सम्मेलन का विषय नहीं यह जीवनशैली का निर्णय है।

उन्होंने वृक्षारोपण को अभियान नहीं, संस्कार बनाया। गांवों में पेड़ लगवाएं, लोगों को समझाया कि मिट्टी से रिश्ता टूटेगा तो पानी भी रूठ जाएगा। देखा जाए तो हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां एक ओर शहरों में कंक्रीट की ऊंचाइयां बढ़ रही हैं, दूसरी ओर नदियां सिकुड़ रही हैं। ऐसे समय में 45 वर्षों का उनका कार्य हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम विकास की परिभाषा में प्रकृति को शामिल कर पाए हैं? उनका सम्मान हमें झकझोरता है कि पर्यावरण की लड़ाई केवल युवाओं की नहीं, पीढ़ियों की साझी जिम्मेदारी है।

एस.जी. सुशीलम्मा- कर्नाटक की सामाजिक कार्यकर्ता एस.जी. सुशीलम्मा ने सामाजिक कार्य के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह किसी एक परियोजना तक सीमित नहीं। उनका काम समाज के उन वर्गों तक पहुंचा जो अधिकतर योजनाओं के कागजातों में तो दर्ज होते हैं, पर जमीन पर उपेक्षित रह जाते हैं। सामाजिक सेवा का सबसे कठिन हिस्सा है लगातार बने रहना। एक कार्यक्रम शुरू करना आसान है, पर उसे वर्षों तक जीवित रखना कठिन है। सुशीलाम्मा ने इसी कठिन रास्ते को चुना। उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में दीर्घकालिक पहल की। यह काम किसी तात्कालिक लोकप्रियता का साधन नहीं बल्कि सामाजिक संरचना में धीमे, पर स्थायी बदलाव का प्रयास था। उनका पद्मश्री हमें यह भी याद दिलाता है कि परिवर्तन का शोर कम होता है, पर उसका असर गहरा।

इन तीनों महिलाओं की कार्यभूमि भले अलग-अलग रही हो, कहीं नक्सल प्रभावित क्षेत्र, कहीं पर्यावरण संरक्षण तो कहीं ग्रामीण समाज सेवा, लेकिन इनका उद्देश्य एक ही था समाज को बेहतर बनाना। आज जब समाज तेजी से बदल रहा है ऐसे समय में इन महिलाओं की यात्रा नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उन्होंने दिखाया कि कठिन परिस्थितियां भी सेवा और समर्पण की राह में बाधा नहीं बन सकतीं। पद्मश्री सम्मान ने उनके कार्य को राष्ट्रीय मंच पर पहचान दी है, लेकिन उनके लिए असली सम्मान उन लोगों की मुस्कान है जिनके जीवन में उन्होंने बदलाव लाया। •••

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of
HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

करुणा की प्रतिमूर्ति डॉ. अरमिडा फर्नांडीस

वात्सल्य

डॉ. अरमिडा फर्नांडीस को 'मुम्बई स्लम की मां' के नाम से जाना जाता है। नवजात शिशु की देखभाल और स्तनपान को बढ़ावा देने व मां के दूध को प्रिजर्व कर शिशु के मृत्यु दर को कम करने के लिए इन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। इनके इस कार्य के लिए 2026 में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

डॉ. मोनिका शर्मा

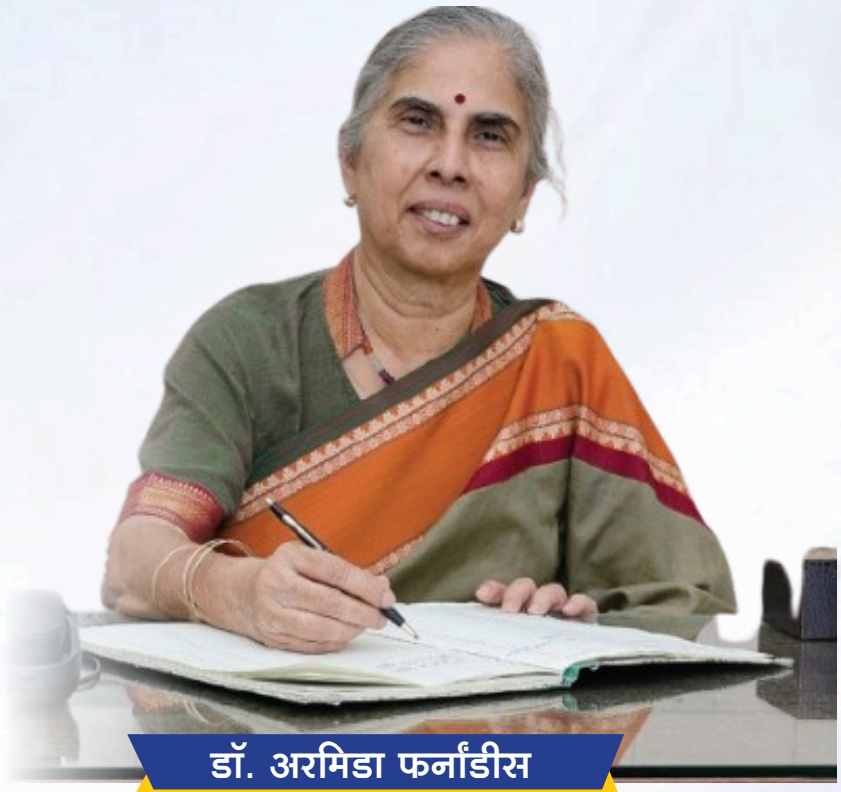

डॉ. अरमिडा फर्नांडीस

स्त्री जीवन से जुड़ा सबसे सुंदर भाव मातृत्व है। मातृत्व से जुड़ा सबसे प्यारा और जवाबदेही भरा जुड़ाव बच्चे की सम्भाल व देखभाल है। दुनिया में आने वाले बच्चे को स्वस्थ रखना इस जुड़ाव की पहली प्राथमिकता होती है। आमतौर पर माताएं ही इस दायित्व को जीती हैं। अपने बच्चों को जी-जान लगाकर पालती-पोसती हैं। ऐसे में निःस्वार्थ भाव से शिशुओं का जीवन बचाने की पहल करने वाले प्रेरणादाई चेहरे जरा और महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वर्ष 2026 में पद्मश्री सम्मान पाने वाली डॉ. अरमिडा फर्नांडीस भी ऐसे ही एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व हैं। अरमिडा को 'मुम्बई स्लम की मां' के नाम से भी जाना जाता है। नवजात शिशु की देखभाल और स्तनपान को बढ़ावा देने में उनका योगदान रेखांकित करने योग्य है। मां के दूध को प्रीर्जव कर शिशु के मृत्यु दर को कम करने के लिए इन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। सार्थक एवं सशक्त सोच- व्यक्तिगत जीवन की बेहतरी के लिए ही नहीं समाज के कुछ भला करने हेतु भी सार्थक सोच और मन की मजबूती आवश्यक है। भारतीय स्त्रियां इस मोर्चे पर सदा से ही प्रेरणादायी उदाहरण बनती रही हैं। डॉ. अरमिडा फर्नांडीस भी संघर्ष और दृढ़ निश्चय की ऐसा ही आदर्श हैं। उनके लिए चिकित्सा की दुनिया में प्रवेश करना भी आसान नहीं रहा। घर-परिवार में डॉक्टर बनने की इच्छा को गम्भीरता से नहीं लिए जाने के बाद भी वे डटीं रहीं। अपनी मेहनत से प्रवेश परीक्षा पास कर मुम्बई में मेडिकल की पढ़ाई करने पहुंचीं। 83 वर्ष की आयु में पद्मश्री से सम्मानित होने और दशकों तक निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाली डॉ. फर्नांडिस ने 27 नवम्बर 1989 में सायन हॉस्पिटल में भारत

और एशिया का पहला ह्यूमन मिल्क बैंक स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईं। प्रीमेच्योर और नवजात शिशुओं की जान बचाने वाली इस पहल ने देश ही नहीं दुनियाभर में चर्चा और सराहना पाई है।

भारत में प्रत्येक वर्ष 35 लाख शिशु प्रीमैच्योर होते हैं। वर्षों पहले यह आंकड़ा और अधिक था। ऐसे में नवजात शिशुओं के जीवित रहने की दर में सुधार लाने और नवजात गहन चिकित्सा इकाइयों में भर्ती बच्चों की माताओं को स्तनपान के लिए प्रोत्साहित करने से जुड़े विषय पर रिसर्च करना भी डॉ. फर्नांडिस के महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल है। रिसर्च से पता चला कि मां का दूध और ब्रेस्ट फीडिंग प्रीमेच्योर बच्चों में बीमारी और मृत्यु दर को कम करते हैं इसीलिए उन्होंने देशभर में ब्रेस्ट फीडिंग को बढ़ावा देने के लिए स्तनपान और मिल्क बैंकिंग को लेकर जन-जागरूकता लाने का महत्वपूर्ण काम किया।

संवेदनाओं से भरा मन- महिलाएं अपनी हर भूमिका में समाज में संवेदनशीलता को पोसती हैं। भावनाओं भरा उनका मन किसी की सहायता करने या परिस्थिति को बेहतर बनाने का भाव रखता ही है। व्यावहारिक रूप से किसी समस्या को एक अवसर के रूप में देखना हमारे देश की स्त्रियों के स्वभाव में रहा है। समाज में सकारात्मक क्रांति लाने वाली संवेदनशीलता का यही भाव डॉ. फर्नांडिस के व्यक्तित्व और विचारों का हिस्सा रहा। इसी सोच को धरातल पर उतारने के उनके प्रयास प्रेरणादाई हैं। एक चिकित्सक के रूप में ही नहीं सरोकारी सोच रखने वाली स्त्री के रूप में उनकी भागीदारी याद रखने योग्य है। डॉ. अरमिडा फर्नांडिस ने सिद्ध किया कि कठिन परिस्थितियों में भी मानवीय जीवन बचाने वाले समाधान खोजे जा सकते हैं। नवजात शिशुओं के सरवाइवल के लिए सहज और सरल उपाय के तौर पर मिल्क बैंक का विचार कठिन समय में ही उपजा था। महाराष्ट्र सरकार के समर्थन से 'बेबी फ्रेंडली हॉस्पिटल इनिशिएटिव' के अंतर्गत मुम्बई और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में मैटरनिटी होम्स स्थापित करने में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही। इतना ही नहीं मदर एंड इन्फेंट एंड यंग चाइल्ड न्यूट्रिशन से जुड़े प्रोग्राम शुरू करने में भी उनकी सराहनीय भागीदारी है। अपनी सधी और मानवीय सोच के चलते 1999 में डॉ. फर्नांडिस ने एसएनइएचए (स्नेहा- सोसाइटी फॉर न्यूट्रिशन, एजुकेशन एंड हेल्थ एक्शन) की स्थापना की। उनका यह मिशन माताओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य, न्यूट्रीशन, किशोर स्वास्थ्य और महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध हिंसा की रोकथाम और वुमन एम्पावरमेंट को लेकर काम करता है। समझना कठिन नहीं कि इन क्षेत्रों में काम करना समग्र समाज की बेहतरी से जुड़ा है।

बना सजगता का परिवेश - मां का दूध नवजात के लिए अमृत के समान होता है। उसके बिना बच्चे का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता, पर भारतीय परिवेश में माताओं को अपना दूध डोनेट करने के लिए तैयार करना भी उनके लिए सरल नहीं रहा। आमजन हों या चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े लोग, उनके लिए किसी को भी यह समझाना आसान नहीं था कि मां का दूध न मिलने पर नवजात बच्चे को जानवरों को दूध पिलाया जा सकता है तो दूसरी मां का क्यों नहीं? इन परिस्थितियों में उनके दृढ़ निश्चयी मन द्वारा किए गए प्रयासों ने न केवल बहुत से नवजातों का स्वास्थ्य सहेजा बल्कि ब्रेस्ट मिल्क डोनेट करने को लेकर महिलाओं में जागरुकता भी आई। इसके लिए किसी शिशु को मां का दूध नहीं मिलने पर ह्यूमन मिल्क बैंक से दूध लेने की राह खोली। साथ ही मदर्स को अपना दूध दूसरे नवजातों के लिए देने को भी कहा। आमतौर पर मदर्स को लगता है कि मिल्क डोनेट करने से अपने बच्चे के लिए दूध कम हो जाता है। मिल्क बैंक की पहल ने इस भ्रम को भी दूर किया। मातृत्व को जी रहीं महिलाओं को अवेयर किया गया कि एक मां यदि मिल्क डोनेट करती है तो मिल्क प्रोडक्शन भी बढ़ जाता है। इस पहल को जागरूकता और उत्साह दोनों मोर्चों पर साधना आवश्यक था। यही कारण है कि हेल्थकेयर इनोवेशन में उनके कभी ना भुलाए जा सकने वाले योगदान के लिए डॉ. फर्नांडिस को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। देश की नई पीढ़ी का जीवन बचाने वाली यह पहल नवजातों के लिए पोषण ही नहीं स्वस्थ जीवन की आशा भी है।

●●●

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

इस वर्ष 2026 में पद्मश्री से सम्मानित हुईं कुछ ऐसी ही प्रेरणादायक महिलाएं हैं, जिनकी यात्रा हमें यह सिखाती हैं कि प्रतिभा केवल मंच पर नहीं चमकती, वह कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए और भी निखरती है।

तपस्या

संघर्ष से निकली स्वर और साधना की शक्ति

निहारिका पोल-सर्वटे

संघर्ष की तप्त धरा पर जो अविचल खड़े रह जाते हैं,
विपदा के प्रचण्ड झंझावातों में भी जो न झुक पाते हैं।
साधना से सिंचित जीवन जब कला में रूप धर जाता है,
तब एक नारी का संघर्ष स्वयं प्रेरणा बन जाता है।

भारतीय संस्कृति में कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बल्कि साधना और आत्मबल का प्रतीक रही है। जब किसी कलाकार के जीवन में संघर्ष की तपिश जुड़ जाती है, तब उसकी कला और भी गहरी और अर्थपूर्ण हो जाती है। कर्नाटक की प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी रंजनी और गायत्री बालासुब्रमण्यम हों, कुचिपुड़ी की प्रख्यात नृत्यांगना दीपिका रेड्डी या फिर वाराणसी की वह शास्त्रीय गायिका जिसने एसिड अटैक जैसी भयावह त्रासदी को झेलते हुए भी अपनी आवाज की रोशनी को बुझने नहीं दिया। इन सभी की कहानी भारतीय स्त्री की अदम्य शक्ति का उदाहरण है।

स्वर की साधना: रंजनी और गायत्री की यात्रा

कर्नाटक संगीत की दुनिया में रंजनी और गायत्री बालासुब्रमण्यम का नाम आज सम्मान और गरिमा के साथ लिया जाता है। इन दोनों बहनों ने संगीत को केवल पेशा नहीं बल्कि जीवन का ध्येय बनाया। बचपन से ही संगीत उनके घर के वातावरण में था, लेकिन उस वातावरण को साधना में बदलना आसान नहीं था। कर्नाटक संगीत एक अत्यंत अनुशासित और जटिल परम्परा है। उसमें स्थान बनाना वर्षों की साधना और आत्मसंयम मांगता है। रंजनी और गायत्री ने अपने जीवन के शुरुआती वर्षों में कठोर अभ्यास, निरंतर अध्ययन और मंचीय अनुभव के माध्यम से खुद को इस परम्परा के योग्य बनाया। आज उनकी जुगलबंदी केवल संगीत का प्रदर्शन नहीं होती बल्कि श्रोताओं के लिए एक आध्यात्मिक अनुभव बन जाती हैं। उनके सुरों में परम्परा की गहराई भी हैं और आधुनिकता की सहजता भी। उन्हें 2026 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केवल उनकी प्रतिभा का नहीं बल्कि उस धैर्य और अनुशासन का भी है, जिसने उन्हें इस लक्ष्य तक पहुंचाया।

नृत्य में समर्पण की कथा: दीपिका रेड्डी

भारतीय शास्त्रीय नृत्य केवल कला नहीं बल्कि शरीर और आत्मा की साधना है। दीपिका रेड्डी ने कुचिपुड़ी नृत्य के माध्यम से इस साधना को अपने जीवन का केंद्र बनाया।

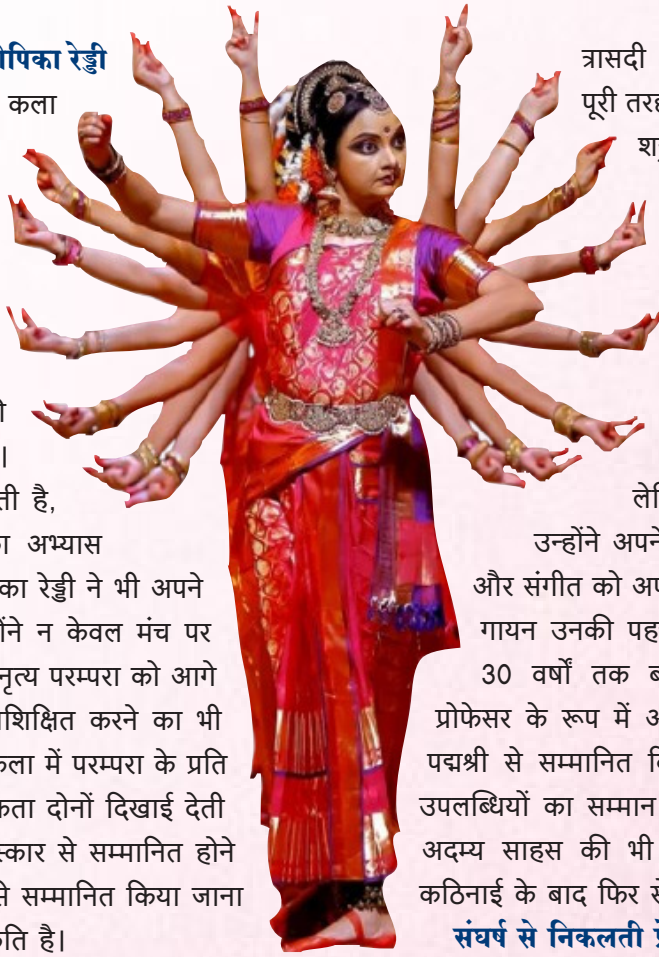

कुचिपुड़ी की परम्परा में निपुणता प्राप्त करने हेतु वर्षों की तपस्या की आवश्यकता होती है। मंच पर जो सहजता दिखाई देती है, उसके पीछे अनगिनत घंटों का अभ्यास और त्याग छिपा होता है। दीपिका रेड्डी ने भी अपने जीवन में यही मार्ग चुना। उन्होंने न केवल मंच पर उत्कृष्ट प्रस्तुतियां दीं बल्कि इस नृत्य परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए नई पीढ़ी को प्रशिक्षित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी कला में परम्परा के प्रति सम्मान और प्रयोग की साहसिकता दोनों दिखाई देती हैं। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद 2026 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जाना उनके योगदान की राष्ट्रीय स्वीकृति है।

असाधारण साहस की कहानी: वाराणसी की प्रसिद्ध गायिका 'मंगला कपूर'

इन सबके बीच सबसे मार्मिक और प्रेरणादायक कहानी वाराणसी की उस शास्त्रीय गायिका की है, जिनकी जिंदगी ने असाधारण संघर्ष देखा। मंगला कपूर, जिन पर केवल 12 वर्ष की आयु में एसिड अटैक हुआ। यह एक ऐसी त्रासदी थी, जो किसी भी जीवन को पूरी तरह बदल सकती थी। पारिवारिक शत्रुता के चलते उन पर एसिड अटैक हुआ और लगा कि सब समाप्त हो गया है। 36 सर्जरी, 6 वर्षों तक अस्पताल में रहना और उसके बाद एक नया जीवन शुरू करने का प्रयास, यह सब किसी भी व्यक्ति को तोड़ सकता था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने भीतर की ताकत को खोजा और संगीत को अपनी शक्ति बना लिया। शास्त्रीय गायन उनकी पहचान बना। यही नहीं, उन्होंने 30 वर्षों तक बनारस हिंदु विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में अध्यापन भी किया। 2026 में पद्मश्री से सम्मानित किया जाना उनके जीवन की उपलब्धियों का सम्मान तो है ही, साथ ही यह उस अदम्य साहस की भी पहचान है जिसने उन्हें हर कठिनाई के बाद फिर से खड़ा होने की शक्ति दी।

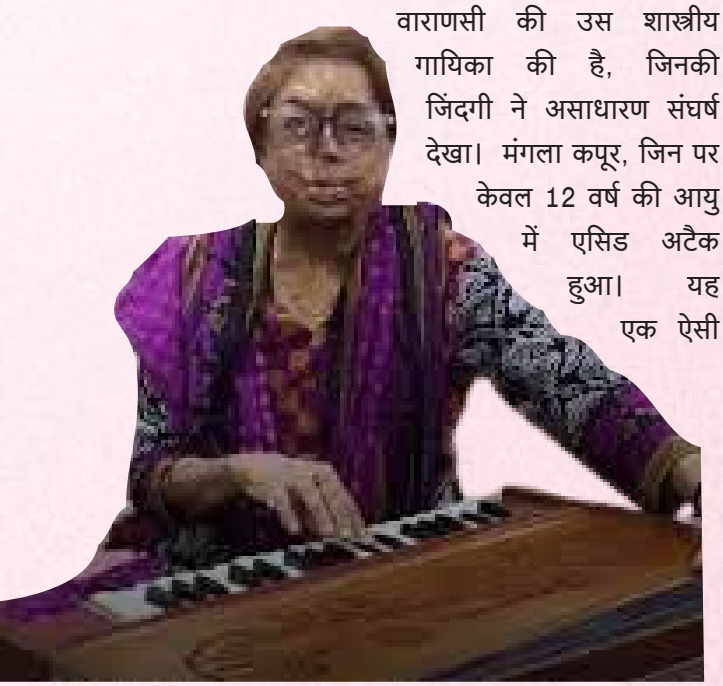

संघर्ष से निकलती प्रेरणा

इन तीनों कहानियों को यदि एक सूत्र में बांधा जाए तो वह है साधना, साहस और निरंतरता। रंजनी और गायत्री ने यह दिखाया कि परम्परा को साधने के लिए धैर्य और अनुशासन कितना आवश्यक है। दीपिका रेड्डी ने यह सिद्ध किया कि कला केवल प्रदर्शन नहीं बल्कि संस्कृति को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी है और मंगला कपूर ने यह सिद्ध किया कि जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियां भी व्यक्ति की आंतरिक शक्ति को नहीं रोक सकतीं। इन महिलाओं की यात्रा हमें यह भी बताती है कि पुरस्कार केवल उपलब्धि का प्रतीक नहीं होते। वे उन अनगिनत संघर्षों की स्वीकृति होते हैं, जो मंच के पीछे छिपे रहते हैं।

महिला दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं है। यह उन कहानियों को याद करने का अवसर है, जो हमें यह सिखाती हैं कि साहस, प्रतिभा और धैर्य किसी भी परिस्थिति से बड़ा हो सकता है। रंजनी, गायत्री, दीपिका और मंगला हमें याद दिलाती हैं कि कला केवल सौंदर्य नहीं बल्कि शक्ति भी है। यह शक्ति कठिन समय में मनुष्य को सम्भालती है और उसे आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती है।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

नारी तुम अपराजिता

डॉ. नीतू गोस्वामी

मन में जब कुछ करने की लगन होती है तो समय, परिस्थिति व सीमा कभी बाधा नहीं बनती। बानो जेफिन अर्जगिरी एक ऐसी दृष्टिहीन महिला हैं जिन्होंने अपना मनोबल कभी गिरने नहीं दिया और अपनी अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर देश की पहली महिला दृष्टिहीन आईएफएस अधिकारी बनने का गौरव प्राप्त किया।

आज के युग की बुद्धिमती, कर्मठ, निष्ठावान नारियों ने अनेक नव कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वैदिक काल में नारियों ने वेदों की ऋचाएं लिखी हैं और शास्त्रार्थ में भी बड़े-बड़े विद्वानों को पराजित किया है। रामचरितमानस में प्रत्येक नारी पात्र स्वयं में दिव्य-भव्य और गुणों से युक्त हैं। महाभारत में गांधारी ने यद्यपि अपने नेत्रों पर पट्टी बांध ली तथापि उन्होंने इस साधना से इतना तेज अर्जित किया कि दुर्योधन पर दृष्टि डालकर उसे वज्र के समान बना दिया।

आज के आधुनिक युग में स्त्री हर क्षेत्र में अपना झंडा गाड़ रही हैं। वह केवल परिवार की धुरी नहीं बल्कि शिक्षा, विज्ञान, कला राजनीति और व्यवसाय में भी अपनी प्रतिभा के बल पर नव कीर्तिमान गढ़ रही हैं। वे ट्रेन चला रही हैं, वे फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं, वे शत्रुओं के घर में घुसकर उन्हें सबक सिखाती हैं और देश का गौरव बढ़ाती हैं। वे प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री, राष्ट्रपति हर पद को सुशोभित करती हैं। वह आज इतनी सशक्त हैं कि हर क्षेत्र में अपनी कला, क्षमता, नेतृत्व का लोहा मनवा रही हैं।

हम यदि राजनीति की बात करें तो राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, निर्मला सीतारमण जैसे अनेक उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। बात विज्ञान की करें तो कल्पना चावला, टैसी थॉमस जैसे नाम हमारे मस्तिष्क पटल पर स्पष्ट हो आते हैं। बात अध्यात्म की करें तो गार्गी, आपला, घोषा, मैत्रयी, मीरा , सती अनुसुइया जैसे नाम से हम सब परिचित हैं। खेल जगत की बात करे तो पीवी सिंधु, साइना नेहवाल, साक्षी मलिक, सानिया मिर्जा जैसे नाम को कौन नहीं जानता। फिल्मों में अपनी कला का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली मीना कुमारी, निरुपमा राय, श्रीदेवी, रेखा, हेमा मालिनी, कैटरीना कैफ और न

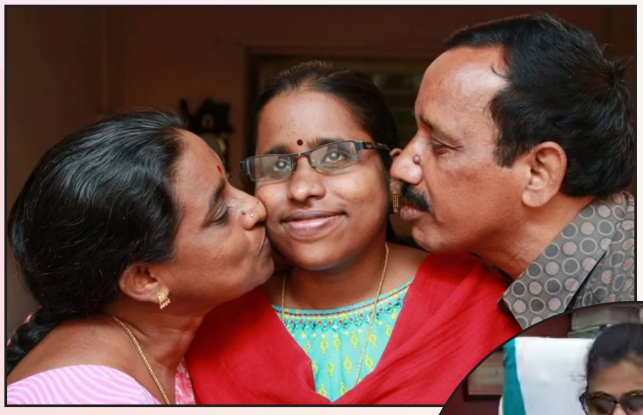

जाने कितनी महिलाओं ने अपनी कला का लोहा मनवाया है। समय-समय पर भारत की बेटियों ने पूरे विश्व को यह दिखा दिया कि वह किसी से कम नहीं और यही कारण है कि हमारे यहां कहा जाता है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता' हमारी भारतीय भूमि देवों की भूमि है। नारी के गौरव को आत्मसात करने वाली भूमि है। इस गौरवशाली भूमि में वीर लक्ष्मीबाई, जीजामाता, रानी हाड़ावती, पन्नाधाय, अहिल्याबाई होल्कर आदि जैसी विभूतियां उत्पन्न हुई हैं। जिन्होंने अपनी कुशल क्षमताओं का प्रदर्शन कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। ऐसी ही एक दृढ़ निश्चय महिला बानो जेफिन अर्जगिरी ने देश को गौरवान्वित किया है और नारी सम्मान को गौरव दिलाया है।

बानो जेफिन ने हाल ही में नेत्रहीन होने के बाद भी आईएफएस अधिकारी के पद को प्राप्त किया। बानों जेफिन का जन्म केरल में हुआ। बचपन से ही वे नेत्रों की ज्योति खो चुकी थीं, लेकिन उनका उत्साह व दृढ़निश्चय ने इसे अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। उन्होंने यह बचपन में ही तय कर लिया कि वह सिविल सेवा में जाएंगी और देश की सेवा करेंगी। उन्होंने ब्रेल लिपि के माध्यम से पढ़ाई प्रारम्भ की। मां पद्मजा उन्हें समाचारपत्र पढ़कर सुनाती थीं और पिता ढूंढ-ढूंढ कर ब्रेल स्टडी मैटेरियल लाते थे। माता-पिता के पूर्ण सहयोग ने उनकी आशाओं को पंख दिए और उनके कठिन परिश्रम ने उन्हें भारत की पहली नेत्रहीन आईएफएस ऑफिसर बना दिया।

इस सक्सेस स्टोरी को खुद उन्होंने एक साक्षात्कार बताते हुए कहा कि मेरे परिवार ने मुझे दिव्यांग होने का आभास नहीं दिलाया। मेरा स्कूल जीवन बहुत अच्छा गुजरा और मेरे शिक्षकों ने भी मेरा भरपूर सहयोग किया। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद स्टेला मैरिस कॉलेज चेन्नई से इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर में बैचलर डिग्री प्राप्त की, फिर लोयोला कॉलेज से साल 2013 में मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की। वे लोयोला स्टूडेंट यूनियन की सदस्य और लोयोला महिला फॉर्म की सदस्य के रूप में सक्रिय रहीं। कॉलेज से निकलते ही उन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू की। इसके लिए उन्होंने और उनके माता-पिता ने कठिन परिश्रम किया। उन्होंने कम्प्यूटर में ऐसे सॉफ्टवेयर डलवाए जो आवाज पर काम करते थे। उन्हें सुनकर इंटरनेट के जरिए स्टडी मैटेरियल निकाल और उनसे तैयारी की। टीवी पर समाचार सुनती थीं। उनकी कड़ी मेहनत और लगन का सुखद परिणाम था कि उन्होंने 2014 में पहले ही अटेम्प्ट में यूपीएससी सिविल

सेवा परीक्षा में 343 वीं रैंक प्राप्त की। आज वे इंडियन फॉरेन सर्विस अफसर हैं। वर्तमान में वे इंडोनेशिया की राष्ट्रीय राजधानी जकार्ता में फर्स्ट सेक्रेटरी कमर्शियल एंड पॉलीटिकल पद पर तैनात हैं। देश की पहली दृष्टि बाधित विदेश सेवा अधिकारी आज महिलाओं एवं दिव्यांगजनों को ही नहीं, आम जनमानस को भी प्रेरित कर रही हैं और उनको नई दिशा दे रही हैं। वे आज लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन चुकी हैं। उनकी मां पद्मजा ने भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी बेटी को इस लक्ष्य तक पहुंचाकर समाज में एक आदर्श स्थापित किया है और एक बार पुनः यह सिद्ध किया है कि नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं हैं। वास्तव में स्त्री जब अपने मनोबल के साथ जिस क्षेत्र में कदम रखती है वहां अपनी प्रतिभा से स्वयं को सिद्ध करती है। भारत की नारी सदैव से ही सशक्त और वंदनीय है। आज देश को गर्व है कि शरीर की एक अपंगता उसके मार्ग की बाधा न बन सकी और उसने अपने उत्साह से आसमान छू लिया। बानो जेफिन ने भारत की अन्य बेटियों के लिए एक आदर्श स्थापित किया है।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

खेल

स्त्री शक्ति का शंखनाद

खेल जगत में महिलाओं का योगदान केवल पदकों की चमक नहीं बल्कि संघर्ष, समर्पण और आत्मविश्वास की अमिट गाथा है।

अपर्णा झा

भारतीय खेल जगत में महिलाओं का योगदान केवल उपलब्धियों का विवरण नहीं बल्कि अदम्य साहस, अथक परिश्रम और कठिन संघर्ष की सजीव गाथा है। जिन्होंने आज विश्व मंच पर देश का नाम रोशन किया है, उनके पीछे वर्षों का संघर्ष, त्याग और विपरीत परिस्थितियों से जूझने की कहानी छिपी है।

महिला क्रिकेट विश्व कप में भारतीय दल की यात्रा

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार 1978 में इंग्लैंड में आयोजित महिला क्रिकेट विश्व कप में भाग लिया था। वर्ष 2017 में इंग्लैंड में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम विश्व कप के फाइनल में पहुंची और उपविजेता बनकर नया रिकॉर्ड स्थापित किया। वर्ष 2020 में ऑस्ट्रेलिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला टी 20 क्रिकेट विश्व कप में टीम ने पुनः महत्वपूर्ण प्रदर्शन किया। हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व में भारतीय टीम ने फाइनल में ऑस्ट्रेलिया का जमकर सामना किया और कई रिकॉर्ड दर्ज किए। इस टूर्नामेंट ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम का वैश्विक स्तर पर लोहा मनवाया।

महिला दृष्टिबाधित क्रिकेट विश्व कप

पहला महिला दृष्टिबाधित क्रिकेट विश्व कप का आयोजन कोलम्बो, श्रीलंका में 2025 में हुआ, जिसमें भारत ने फाइनल में नेपाल को 7 विकेट से हराकर जीत

प्राप्त की। भारतीय टीम पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रही। प्रमुख खिलाड़ियों में कप्तान दीपिका टीसी और प्लेयर ऑफ द मैच फूला सरेन शामिल थीं, जिन्होंने नाबाद 44 रन बनाकर अंतिम लक्ष्य का पीछा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ओलम्पिक और पैरालम्पिक में सफलता

पी.वी. सिंधु ने कठिन अभ्यास और अनुशासन को अपनी जीवनधारा बनाया। जिससे उन्होंने अनेक बड़ी उपलब्धियां जिनमें ओलम्पिक पदक और विश्व स्तर की सफलता प्राप्त की।

ओलम्पिक खेल 2016 (रियो डी जनेरियो ओलम्पिक) में बैडमिंटन महिला एकल में रजत पदक जीता। यह उपलब्धि भारत के लिए बैडमिंटन में ओलम्पिक पदक की पहली महिला सफलता थी।

ओलम्पिक खेल 2020 (टोक्यो ओलम्पिक) में बैडमिंटन महिला एकल में कांस्य पदक जीता। इस उपलब्धि के बाद वे 2 बार ओलम्पिक पदक प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला बन गईं।

पी. वी. सिंधु ने इसके अलावा कई विश्व चैम्पियनशिप पदक भी जीते।

भारोत्तोलन की प्रेरक महिला : मीराबाई चानू का नोंगपोक काकचिंग गांव, जिला इम्फाल ईस्ट, में जन्म, नियमित साधनों से वंचित ग्रामीण परिवेश में हुआ। आर्थिक विपन्नता के अभाव में शुरुआत में उन्हें पर्याप्त पोषण और बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं नहीं मिलीं। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों के साथ ही उन्हें अभ्यास करने के लिए प्रतिदिन घर से बहुत दूर इम्फाल तक जाना पड़ता था। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप उन्होंने अंतरराष्ट्रीय भारोत्तोलन के बड़े मंचों पर सफलता प्राप्त की। टोक्यो ओलम्पिक 2020- मीराबाई चानू ने महिलाओं के 49 किलोग्राम श्रेणी में रजत (Silver) पदक जीता था। यह भारत का उस खेल में पहला रजत भी था।

मीराबाई चानू ने 2017 वर्ल्ड वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप में 48 ग्रास वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने 2022 वर्ल्ड वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता था। उन्होंने 2025 वर्ल्ड वेटलिफ्टिंग चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता है। इसके साथ वह विश्व चैम्पियनशिप में तीसरी बार (2017, 2022, 2025) पदक पर पहुंचीं।

पैरालम्पिक की स्वर्ण सपूत : जयपुर, राजस्थान में जन्मीं अवनि लेखरा को 11 वर्ष की आयु में एक दुर्घटना के कारण पैराप्लेजिया का सामना करना पड़ा। दुर्घटना के बाद कई दुष्कर कठिनाइयों, मानसिक परेशानियों तथा जीवनयापन में भारी बदलाव के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने निशानेबाजी को अपना लक्ष्य बनाया और कठिन अभ्यास की शुरुआत की। टोक्यो पैरालम्पिक 2020 में 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग ड्क1 में स्वर्ण पदक और 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन ड्क1 में कांस्य पदक जीता- यह उपलब्धि उन्हें एक ही पैरालम्पिक में 2 पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनाती है।

पेरिस पैरालम्पिक 2024 में 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग SH1 में पुनः स्वर्ण पदक प्राप्त किया- यह पहली बार था जब किसी भारतीय महिला ने दो पैरालम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक जीता।

मैरी कॉम: भारत की सबसे सफल महिला मुक्केबाज हैं, जिन्हें मैग्नीफिसेंट मैरी के नाम से जाना जाता है। विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में 6 बार की विश्व चैम्पियन (6 वर्ल्ड गोल्ड मेडल), 2012 लंदन ओलम्पिक, एशियाई व राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक उनकी प्रमुख उपलब्धियां हैं। उन्होंने मातृत्व के बाद भी शानदार वापसी करते हुए पद्म विभूषण पुरस्कार प्राप्त किया।

हिमा दास : इन्होंने कठिन अभ्यास और अनुशासन के बल पर सफलता प्राप्त की। विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 2018 में 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता, जो भारत के लिए विश्व स्तर की ट्रैक दौड़ में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

बिना बाहों के तीरंदाजी का दुर्लभ उदाहरण: शीतल देवी का जन्म जम्मू-कश्मीर के किश्तवार जिले में हुआ, एक असामान्य बीमारी के कारण उनकी बाहों का विकास सामान्य नहीं हुआ। जीवन की दैनिक गतिविधियां उनके लिए चुनौतीपूर्ण थीं, परंतु उन्होंने इसे बाधा नहीं बनने दिया। उन्होंने पैरों और कोर शक्ति से धनुष चलाना सीखा तथा कठिन संरचित अभ्यास कर अद्भुत उपलब्धियां प्राप्त कीं। एशियन पैरा गेम्स 2022 में व्यक्तिगत और मिश्रित टीम दोनों में स्वर्ण पदक जीता। पेरिस पैरालम्पिक 2024 में मिश्रित टीम कम्पाउंड में कांस्य पदक प्राप्त किया। विश्व पैराअर्चरी चैम्पियनशिप 2025 में व्यक्तिगत कम्पाउंड वर्ग में स्वर्ण पदक जीता।

हॉकी की दुर्गा: रानी रामपाल का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ जहां संसाधनों की कमी और सामाजिक दबाव था। उनके लिए शुरुआती बाधाएं थीं। इसके बाद भी उन्होंने कठोर अभ्यास और अनुशासन के साथ हॉकी में उपलब्धियां प्राप्त कीं। महिला हॉकी विश्व कप 2010 में मात्र 15 वर्ष की आयु में उन्होंने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। महिला हॉकी जूनियर विश्व कप 2013 में भारत को कांस्य पदक दिलाया। एशियाई खेल 2018 में भारतीय महिला हॉकी टीम को रजत पदक दिलाया। टोक्यो ओलम्पिक 2020 में भारतीय महिला हॉकी टीम को चौथा स्थान दिलाया।

नारी ये तेरा कैसा रूप!

प्रसव वेदना से कोई महिला जब छटपटाती है तो यही वेदना अपने बच्चे को देखकर उसकी ममता में बदल जाती है। इसलिए नारी को ममतामयी, करुणा व स्नेह की प्रतिमूर्ति कहा गया है। आज नारी का यह रूप बदल गया है और वे हिंसक, विद्रोही व क्रूरता को भी पार कर रही हैं, उनका वीभत्स रूप सामने आ रहा है।

महिलाएं जो ममता की प्रतिमूर्ति, समर्पण की पराकाष्ठा और गहरी संवेदना के लिए सदियों से जानी जाती हैं। यहां तक कि पौराणिक कथाओं में भी उनकी वही छवि उजागर होती रही हैं। हालांकि अपवाद तो सदैव ही होते है, लेकिन इन दिनों महिलाओं की अपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता के समाचार अधिक सुनाई दे रही हैं। इसके साथ ही वे निर्ममता की सीमा पार करती दिखाई दे रही हैं। एक ऐसा भी दौर रहा था, जब ऑनर कीलिंग के समाचार आए दिन सुनाई देते थे। कभी अंतर्जातीय, तो कभी अंतरधर्मिय विवाह के हिंसक परिणाम होते थे। जब शुरू में राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी के गुम होने की बात सामने आई तो कोई सोच भी नहीं सकता था कि सोनम ही अपने पति की हत्या में संलिप्त होगी।

महिलाओं के व्यवहार का इस तरह कल्पना से परे जाकर ऐसी घटना को अंजाम देना कई प्रश्न खड़े करता है कि आखिर ऐसी विकृत मानसिकता महिलाओं में क्यों पनप रही हैं। व्यवसायीकरण ने इन दिनों अपनी मजबूत जड़ें आस-पास फैला रखी हैं। सोशल मीडिया, विज्ञापन हर किसी को अच्छे कपड़े, मोबाईल, महंगे वाहन की ओर तेजी से खींचने लगे हैं और हर कोई वैसी जिंदगी जीने को लालायित भी हो रहे हैं। प्रश्न ये उठता है कि आखिर ये लालसा पूरी कैसे हो? या तो आप जी तोड़ मेहनत करें और दिन-रात उसके लिए समर्पित कर दें या फिर कोई धोखे का शार्टकट अपनाएं। आजकल के लड़के-लड़कियां एक-दूसरे के अच्छे लुक को देख कर तेजी से आकर्षित तो हो जाते हैं, लेकिन उनकी जमीनी सच्चाई में भिन्नता होती है और वे इस खाई को भरने के लिए तिकड़मबाजी का सहारा लेते हैं। ऐसा होता है कि लड़की सम्पन्न परिवार से है और लड़का बेरोजगार या कम कमाई वाला हो तो वे लड़की की शादी किसी अमीर लड़के से होने देते है और फिर उसे मारने की क्रमबद्ध योजना बनाते है जैसा कि कई केस में हुआ है।

आजकल ओटीटी पर भी ऐसे आईडियाज वाले कई सीरीज आते हैं जो उन्हें उत्प्रेरित करने का कार्य करते हैं। पिछले दिनों एक समाचार पढ़ने में आया कि पत्नी ने अपने पति को प्रेमी के साथ मिलकर मार डाला और उसके शव को टुकड़ों में काट कर नीले ड्रम में सीमेंट के साथ जमा दिया। ऐसी घटनाएं रोंगटे खड़े करती हैं और कहीं न कहीं लोग

परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'

विवाह करने से भी डरने लगे हैं। एक दूसरा पक्ष यह भी है कि इन दिनों चाहे लिव-इन-रीलेशन की बात हो या फिर लव-जेहाद की, कितनी महिलाएं टुकड़ों में कट गईं और क्रूरतम तरीकों से मारी गईं। वहीं जब महिलाओं का वीभत्स रूप सामने आया तो पूरा समाज सहम-सा गया।

इसके अलावा कुछ ऐसी भी घटनाएं हुई हैं जिसमें शादीशुदा महिला ने प्रेमी के साथ रहने के लिए अपने ही बच्चे का गला घोंट दिया या लड़की के जन्म होने पर उसने या उसके घर की महिला ने उसे मार दिया। ऐसे ही एक युवती ने अपने प्रेमी के लिए माता-पिता को विष देकर जान से मार दिया। यदि खुलकर सोचा जाए तो अपराधी का कोई लिंग नहीं होता, वो मानव की एक विकृत मानसिक अवस्था है। इस विषय का एक पक्ष यह भी है कि जब महिलाओं के साथ हद से ज्यादा शोषण हुआ तो वे केवल शोषण करने वाले से ही नहीं पूरे समाज से बदला लेने लगती हैं। इस बात का ज्वलंत उदाहरण फूलन देवी का जीवन है।

समय के साथ हमारी समाजिक संरचना भी बदली है और घर के सदस्यों के बीच आपसी बातचीत कम हो गई है और विवाद ज्यादा हो गए हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि विकृत सोच को दबाने वाला या बदलने वाला भी कोई उपस्थित नहीं होता है। काउंसलर की सहायता ली जाए या मोटिवेशनल स्पीकर को भी संजीदगी से सुना जाए तो ऐसी घटनाएं नहीं होंगी। एक महिला मनोवैज्ञानिक हैं जो अपने शोध कार्य के लिए अधिकतर जेल की महिला कैदियों से मिलने जाती हैं और वो बताती हैं कि ज्यादातर अपराधी महिलाओं के पीछे एक दर्दनाक कहानी छुपी होती है। कभी किसी महिला को लम्बे शारीरिक शोषण से गुजरना पड़ा है तो कभी आर्थिक तंगी के कारण क्षणिक आवेश में आकर वे अपराधी बन गईं। ऐसे ही कई बार सोशल मीडिया के सहारे कई महिलाएं गलत व्यक्ति के झांसे में आकर बड़ी घटनाओं में लिप्त पाई गईं। जब कोई भी अपराध अपनी शाखाएं फैलाने लगे तो उसकी जड़ को कुरेदने की आवश्यकता होती है जिससे वास्तविक कारण समझ में आए। कहते है ना कि एक सड़ी मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है, वैसे ही कुछ महिलाओं के कारण से आज सारी महिलाओं पर प्रश्न-चिन्ह लग गया है।

हां, ये भी सच है कि महिलाओं के ऐसे अप्रत्याशित व्यवहार ने पुरुषों को डराया भी है। वैसे, विद्रोह का यह विकृत स्वरूप कदापि सही नहीं है।

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

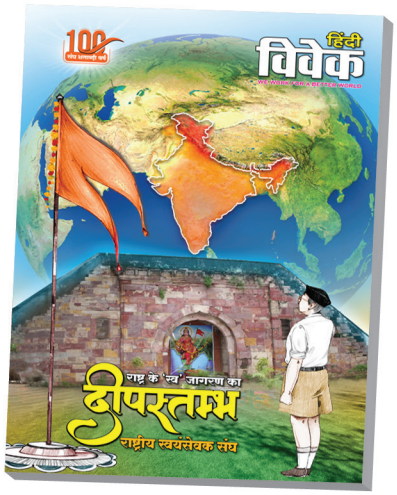

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT™

केसर तिलक–एक अज्ञात रहस्य

केसर तिलक

केसर तिलक आध्यात्मिकता, परम्परा और स्वास्थ्य का एक सुंदर मिश्रण है। यह शुद्ध और पवित्र गंगाजल के साथ शुद्ध केसर से बना है। तिलक आंतरित ऊर्जा को जाग्रत करने, मन की रक्षा करने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है।

माथे, गले और नाभि पर केसर तिलक लगाना आयुर्वेद और आध्यात्मिक परम्पराओं में निहित एक प्राचीन प्रथा है। प्रत्येक बिंदू को शरीर में एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र माना जाता है और केसर स्वयं औषधीय और आध्यात्मिक महत्व रखता है। प्रत्येक क्षेत्र के लाभ इस प्रकार हैं–

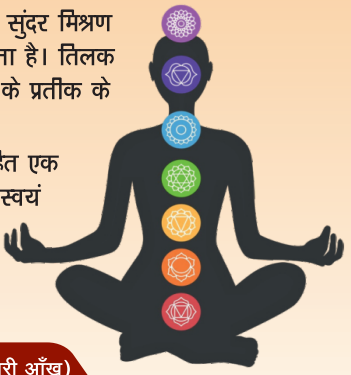

केसर तिलक के अद्भुत लाभ

1. माथा आज्ञा चक्र (तीसरी आँख)
- अंतर्ज्ञान, एकाग्रता और बुद्धि का केंद्र
- ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान शक्ति बढ़ाता है

2. कान
- सतर्कता, जागरुकता और ग्रहणशीलता का प्रतीक
- कानों के पास केसर तिलक लगाने से श्रवण–एकाग्रता और संतुलन बढ़ता है

3. कंठ–विशुद्धि चक्र
- संवाद कौशल्य, आत्मविश्वास और स्व–अभिव्यक्ति को बढ़ाता है
- स्पष्ट संवाद, आंतरिक सत्य और आत्मविश्वास को सशक्त करता है

4. नाभि
- नाभि को शरीर का ऊर्जा केंद्र माना जाता है
- यहाँ केसर तिलक लगाने से शरीर को पोषण मिलता है, पचनशक्ति बढ़ाता है और आंतरिक अंगों की रक्षा होती है

ज्योतिष के अनुसार, केसर तिलक बृहस्पति (ज्ञान, धन, आध्यात्मिकता), बुध (बुद्धि, वित्त, संचार), केतु (बोध, अंतर्ज्ञान, शांति) और मंगल (साहस, शक्ति) की ऊर्जा को संतुलित करता है। प्रसिद्ध लाल किताब में केसर और केसर तिलक से संबंधित अनेक उपाय बताए गए हैं।

लगातार तीन से छह महीनों तक केसर तिलक लगाने से जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं और यह समृद्धि की सिद्ध कुंजी है। केसर तिलक से अपने दिन की शुरुआत करें।

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

सुनते हो जी ..!

ये जो महिला दिवस है हर साल बड़ी जोर से आता है। यूं रहता 8 मार्च को है, पर पूरे मार्च तक थमने का नाम नहीं लेता। समाचार महिलाओं पर टॉक शो, संस्थाएं सम्मान, थोक के भाव में करते हैं। वर्ष भर की गई उपेक्षा का मानो प्रायश्चित कर रहे हो, पर मजे की बात ये कि ज्यादातर इन आयोजनों की आयोजक महिलाएं ही होती हैं। तुम मुझे सम्मान दो मैं तुम्हें। प्रत्येक क्षेत्र की महिलाएं ढूंढ-ढूंढ कर सम्मानित की जाती हैं। चुन-चुन के (सम्मान) दूंगा जैसे टाईप वातावरण बन जाता है। बेचारा पुरुष एक ओर तो वित्तीय वर्ष की समाप्ति के रिटर्न भरने में मगजपच्ची कर रहा होता, दूसरी ओर प्रति सम्मान 20 हजार के हिसाब से गड़बड़ाए बजट की खींचतान करना पड़ता है। नारी शक्ति सम्मान देने वाला तो शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह मिलाकर चार सौ-पांच सौ में निपट जाता है, पर लेने वाले के लिए वह अ-मूल्य रहता है, जिसका मूल्य कितने पर जाकर रुकेगा नहीं बता सकते।

मार्च शुरू होते ही पत्नियां अपने पतियों के सामने घोषणा कर देती हैं, देखो जी पिछले वर्ष चंदेरी में सम्मान ले लिया था, इस बार इकत या टसरकोसा से कम में तो मैं मंच पे चढ़ूंगी ही नहीं। सात से लेकर पंद्रह तक लगातार सम्मान है मेरा। तो एकाध बार पुरानी साड़ी पहन लूंगी, पर एक हैंडपेंटेड कलमकारी, एक अजरकमोडाल, एकाध सिल्क माहेश्वरी और हां दिन के कार्यक्रम के लिए प्योर लिनेन और अपने समाज का कार्यक्रम रात को है तो एक टिशू लिनेन तो लेना ही पड़ेगा। मेंचिग ज्वेलरी का तो ऐसा है कि सिल्वर गोल्ड बहुत मंहगे हैं, पर रुबी तो दिला ही सकते हो। अगले साल कोई बड़ा सम्मान मिला तो अभी से कह देती हूं कांजीवरम ही लूंगी और एक सोफेस्टीकेटेड सा डायमंड का सेट।

और हां इन दिनों इतनी थकान हो जाएगी कि मुझसे खाना नहीं बनेगा,,, हम बाहर खा लिया करेंगे। समाप्त होता वित्तीय वर्ष, वर्ष भर की बचत को चपत लगा कर चम्पत हो जाता है। घर की दीवारें सम्मान पत्र, स्मृति चिन्हों से भर जाती हैं और मोबाइल नारी सशक्तिकरण के भाषणों के वीडियो और फोटो से, बस जेबें खाली रह जाती हैं।

काश कि महिलाओं के सम्मान की ये कवायद वर्ष भर चले, संस्कारों में बोया जाए महिलाओं का सम्मान कि रात को अकेले निकलते समय डरना न पड़े। बच्चियां खेल सकें, निर्भीक हो कर अपने आंगन में। बंद कर सकें स्त्रीसूचक गालियां, जी सकें स्त्रियां अपने स्वाभिमान के साथ। नहीं तो मार्च भर खुद को मूर्ख बना कर 1 अप्रैल को उसे सेलिब्रेट करना तो नियति है ही।

डॉ. साधना बलवटे

संघ के गृह-संवाद अभियान में लॉन टेनिस खिलाड़ी अंकिता रैना से भेंट

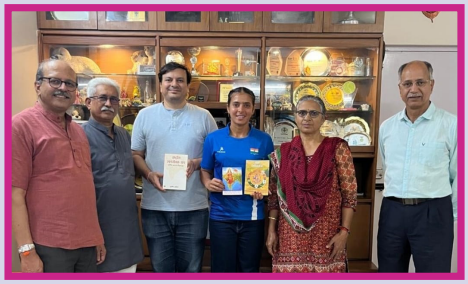

पुणे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर देशभर और विदेशों में वर्षभर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में कर्वेनगर स्थित गृह-संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत कर्वेनगर में निवास करने वाली अंतरराष्ट्रीय लॉन टेनिस खिलाड़ी और वर्ष 2018 की अर्जुन पुरस्कार विजेता अंकिता रैना से उनके निवास स्थान पर भेंट की गई। इस अवसर पर पश्चिम क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख कैलास सोनटक्के, कर्वेनगर संघचालक उदयन पाठक, गिरिजा शंकर, नटराज वस्ती सह-संयोजिका संजीवनी महाजन तथा कर्वेनगर सम्पर्क प्रमुख अनिल वाघ उपस्थित थे। कैलास सोनटक्के ने अंकिता रैना को 'पंचपरिवर्तन' पुस्तक तथा उनके भाई को 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः स्वर्णिम भारत के दिशा सूत्र' पुस्तक और भारत माता की प्रतिमा का कार्ड भेंट स्वरूप प्रदान किया।

दत्तात्रय शेडगे को मातृ शोक

हिंदी विवेक मासिक पत्रिका परिवार के वितरण विभाग के प्रमुख दत्तात्रय शेडगे जी की माता जी का आज अत्यल्प बीमारी के बाद उनके गांव में निधन हो गया है। हिंदी विवेक मासिक पत्रिका परिवार इस दुःखद क्षण में उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति तथा परिवार को इस दुःख को सहन करने कि शक्ति प्रदान करे. ॐ शांति।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने विगत दिवस श्री वडताल धाम में 1008 आचार्य महाराज श्री राकेश प्रसादजी महाराज और पूजनीय संतों के साथ मंदिर में दर्शन करते हुए।

भारतीय संस्कृति संवर्धक संस्था (मोतीबाग) द्वारा विगत दिवस एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध चित्रकार वासुदेव कामत ने कहा कि अयोध्या जी में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर के भव्य निर्माण में अपना छोटा सा योगदान देना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इस अवसर पर उक्त संस्था द्वारा वासुदेव कामत का विशेष अभिनंदन किया गया। संस्था के अध्यक्ष राजीव जोशी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कसबा भाग के संघचालक एड. प्रशांत यादव के हाथों वासुदेव कामत को सम्मान पत्र दिया गया।

हिंदी विवेक के प्रतिनिधि के. एस. चौबे का निधन

गुजरात के वापी में हिंदी विवेक के प्रतिनिधि के. एस. चौबे का बीते दिनों अचानक निधन हो गया। उनके निधन से हिंदी विवेक परिवार और संघ कार्य से जुड़े कार्यकर्ताओं में शोक की लहर है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ और सक्रिय स्वयंसेवक थे। बुजुर्ग अवस्था में भी उनके मन में राष्ट्रधर्म और संघ कार्य के प्रति गहरी निष्ठा और समर्पण बना रहा। उहिंदी विवेक परिवार की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

स्व. प्रहल्लाद दत्तात्रय बारगजे की प्रथम पुण्यतिथि विगत दिवस शुक्रवार को मनाई गई। विदित हो कि बारगजे पुलिस विभाग से सेवानिवृत हुए थे। नौकरी के दौरान ही वो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए थे। वे अपनी ईमानदारी व सादगी के कारण जनप्रिय थे।

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK

Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

A Smarter Way to Grow.

13-Month Special FD -
Limited Time Opportunity.

7.30%* p.a.
FOR SENIOR CITIZENS

7.05%* p.a.
FOR GENERAL CUSTOMERS

(W.E.F 4th March to 23rd March 2026)

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022- 48897204